



डॉ. राजु सी पी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,  
सेंट अल्योप्यस कालेज, तृशूर, केरल ।

(यह शोधपत्र का अंग्रेज़ी से अनुवाद किया गया है, जिसका शीर्षक है “Role of socio-economic status in career aspirations during covid-19 pandemic situations” श्रीमती जिलसा टि एन, सहायक प्रोफेसर, कालिकट विश्वविद्यालय शिक्षक-शिक्षा केंद्र, चालकुडी, केरल द्वारा लिखित)

## कोविड-19 महामारी के दौरान रोज़गार की आकांक्षाओं में बदलते सामाजिक- आर्थिक स्थिति

प्लेटो कहते हैं, "शिक्षा सही समय पर सुख और दर्द को महसूस करने की क्षमता है और यह शिष्य के शरीर और आत्मा में विकसित होती है, सभी सुंदरता और वह पूर्णता जो वह करने में सक्षम है"। ऐसी क्षमता जो शिक्षा द्वारा प्राप्त की जा सकती है, उसका आकलन शैक्षणिक उपलब्धि से किया जा सकता है। अच्छी परिभाषित शैक्षणिक उपलब्धि, प्राप्त ज्ञान या स्कूल के विषयों में विकसित कौशल के रूप में, आमतौर पर परीक्षण स्कोर या शिक्षकों द्वारा दिए गए अंकों द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। अकादमिक उपलब्धि का सार यह है कि व्यक्ति अपनी योजना, भविष्य, अपेक्षाएं, और कार्यों में उत्कृष्टता के मानक को प्राप्त करने के लिए स्वयं बनाता है। छात्र की उपलब्धि परीक्षा, तनाव, जैसे कई कारकों से प्रभावित होती है।

सामाजिक - आर्थिक स्थिति को “समुदाय में व्यक्तियों की सापेक्ष स्थिति” के रूप में परिभाषित किया जा सकता है - चैपलिन जेपी सामाजिक - आर्थिक स्थिति को आमतौर पर पिता, माता, उनकी शिक्षा, उनकी आय, सामाजिक जाति और वर्ग, पड़ोस के व्यवसाय के संदर्भ में मापा जाता है। भौतिक कब्जा, भूमि रूप, शक्ति आदि”। दवे और दवे (1971) आनंद (1973), अब्राहम (1974), दास गुप्ता (1975) ने पाया कि उच्च

सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले छात्र निम्न सामाजिक वाले छात्रों की तुलना में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले होते हैं। मेहोत्रा (1986) ने सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक संबंध पाया।

पारंपरिक भारतीय स्कूली शिक्षा प्रणाली व्यक्तित्व के तीनों पहलुओं में छात्रों के सर्वांगीण विकास की नींव पर आधारित है: शारीरिक, मानसिक और सामाजिक भावना। इस नींव को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली के स्कूलों में पारंपरिक रूप से पाठ्यक्रम में कई गतिविधियाँ होती हैं। कोविड -19 ने मानव गतिविधि के लगभग हर क्षेत्र को, विशेष रूप से उच्च शिक्षा में प्रभावित किया है। कोविड -19 वायरस के प्रसार को रोकने के लिए विभिन्न देशों में लगाए गए लॉक डाउन ने छात्रों और संकाय सदस्यों की आवाजाही को प्रतिबंधित कर दिया है और प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और कक्षाओं तक पहुंच के मामले में बाधाएं खड़ी कर दी हैं।

यूनेस्को के अनुसार 185 देशों में लॉक डाउन के कारण 1 अप्रैल 2021 को दुनिया में कुल नामांकित शिक्षार्थियों में से लगभग 89.4% प्रभावित हुए हैं। दुनिया भर के विश्वविद्यालयों ने दूरस्थ शिक्षण और सीखने की दिशा में बदलाव के लिए बड़े पैमाने पर एक अनियोजित और अप्रस्तुत प्रयोग के माध्यम से कोविड -19 के अचानक प्रकोप का जवाब दिया है। इस कोविड -19 महामारी की स्थिति के दौरान, छात्र अपने भविष्य को लेकर अत्यधिक चिंतित हैं। उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति की पृष्ठभूमि बदल गई थी। वित्तीय समस्याओं के कारण वे अपने रोजगार के विकल्प का चयन नहीं कर सके। करियर की तैयारी जीवन भर सफल रोजगार के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अग्रदूत है और यह किशोरों के समायोजन और भलाई से निकटता से संबंधित है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति ने किशोरों की करियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण कारक दिखाया है। इसमें न केवल आय शामिल है बल्कि शैक्षिक प्राप्ति,

वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक स्थिति सामाजिक वर्ग की व्यक्तिपरक धारणाएं भी शामिल हैं।

शोध अध्ययनों से पता चला है कि जो किशोर निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से थे, उनके करियर की आकांक्षाओं में अनिश्चितता की संभावना अधिक थी। डायमेन और ब्लूस्टीन ने पाया कि नस्लीय, जातीय और सामाजिक-आर्थिक बाधाएं आम तौर पर व्यक्ति के रोजगार के विकास में बाधा डालती हैं। गरीब पृष्ठभूमि के लोगों के लिए रोजगार की बाधाएं काफी अधिक हैं।

इस महामारी की स्थिति के दौरान वर्चुअल शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में अभिनव कदमों में से एक है। वर्चुअल शिक्षा, भारत सहित पूरे विश्व में कुछ समय के लिए किसी न किसी रूप में अस्तित्व में रहा है। वर्तमान कोविड-19 के संदर्भ में वर्चुअल शिक्षा अब हर जगह प्रचलित हो रही है। कंप्यूटर सर्च इंजन में कई शोध परिणाम इस तथ्य को इंगित करते हैं कि ऑनलाइन शिक्षा हर जगह लोकप्रिय हो रही है।

पारंपरिक कक्षा व्यवस्था की तुलना में आभासी शिक्षा के लाभ गणनीय थे। आत्म अनुशासन के आधार पर, सीखने की गति और शैली और ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति की प्रेरणा आसानी से और नश्वर शैक्षणिक संस्थान के कक्षाओं में भाग लेने की तुलना में अधिक प्रभावी सीखने का अनुभव प्रदान कर सकती है। लेकिन वित्तीय स्थिति का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के करियर पर प्रतिबिंबित होता है, उनमें से कई अपनी पढ़ाई छोड़ देते हैं और एक श्रमिक की भूमिका में बदल जाते हैं। इस महामारी की स्थिति ने कई व्यक्तियों को जन्म दिया जो अपने सपनों को विफल कर देते हैं। आइए, हम कामना करते हैं कि उनके जीवन में एक बड़ा बदलाव आए।

### संदर्भ

1. मुन्न्स इंद्रोडक्शन टू साइकोलॉजी (2001), फर्नाल्ड 5वां संस्करण, एआईटीबीएस पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
2. प्रेम प्रकाश (2007), साइकोलॉजिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, कनिष्क पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
3. भाधरी (1991), शिक्षा पटना विश्वविद्यालय, बुच खंड II द्वारा शिक्षा अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण।
4. दांडेकर, डब्ल्यूएन और मखीजा एस (2002), साइकोलॉजिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन चेन्नई, राजीव बेरी मैकमिलन इंडिया लिमिटेड के लिए।
5. इरोजकान.ए (2017)। यूनिवर्सल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च के चिंता संवेदनशीलता आधारों का निर्धारण।
6. फ्रायड, एस (1936) चिंता की समस्या, न्यूयॉर्क, डब्ल्यू.डब्ल्यू नॉर्टन एंड कंपनी।
7. गार्डनर के, (1985) साइकोलॉजी ऑफ लर्निंग फॉर इंद्रोडक्शन डिवीजन ऑफ पैरामाउंट पब्लिशिंग।
8. मंगल एस.के, (2007) एसेंशियल्स ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
9. एडुट्रैक्स-जर्नल-शिक्षा में प्रवृत्तियों का एक मासिक स्कैनर।